राष्ट्रीय युवा संसद महोत्सव के कार्यक्रम में माननीय अध्यक्ष का सम्बोधन

राष्ट्रीय युवा संसद महोत्सव के इस कार्यक्रम में इस विभाग के मंत्री सूचना और प्रसारण मंत्री तथा युवक कार्यक्रम और खेल मंत्री और स्वयं भी युवा श्री अनुराग सिंह ठाकुर, इस विभाग के राज्य मंत्री श्री निशीथ प्रामाणिक और कल बहुत कठिनाई और चुनौतियों से जिन्होंने आपका चयन किया, संसद में हमारे सहयोगी साथी श्री मनोज तिवारी जी, इस विभाग की सचिव श्रीमती गीता जी, खेल युवा सैक्रेटरी श्रीमती सुजाता चतुर्वेदी जी, यहां देश भर के अलग-अलग राज्यों से एक कठिन प्रतियोगी परीक्षा के बाद संसद के इस केंद्रीय कक्ष में पधारे मेरे सभी युवा साथियो, भाईयो और बहनो।

जिस कक्ष में आज आप बैठे हैं, यह एक ऐतिहासिक कक्ष है, जहां भारत की आजादी जो हमने बहुत कठिनाई, चुनौतियों, संघर्षों, त्याग और बलिदान के बाद प्राप्त की, उसका साक्षी यह केंद्रीय कक्ष है। दुनिया का सबसे बड़ा संविधान इसी केंद्रीय कक्ष में एक लम्बी चर्चा, संवाद के बाद बना, इसका साक्षी यह केंद्रीय कक्ष है।

उसके बाद इस 75 वर्ष की लोकतंत्र की यात्रा के अंदर आर्थिक, सामाजिक परिवर्तन का साक्षी यह केंद्रीय कक्ष है और यह आप सब के लिए भी गर्व का विषय है कि इस केंद्रीय कक्ष में युवा सांसद प्रतियोगी के रूप में आपने अपने विचार व्यक्त किए। जिस तरह के विचार व्यक्त किए, जो आपका विजन है, जो आपकी वाकपटुता है, जो आपमें आत्मविश्वास है, आपके अंदर नया भारत बनाने का जो संकल्प और सपना है, यह मैंने आज आपके बीच में देखा। सभी प्रतिभागियों को बधाई देता हूं और जिन्होंने प्रथम, द्वितीय और तीसरा स्थान प्राप्त किया है।

सुश्री आस्था शर्मा, जो हिमाचल प्रदेश की पहाड़ियों से आती हैं, श्री नरेश क्षेत्री, जो उत्तर पूर्व सिक्किम राज्य से आए हैं, सुश्री माहिरा खान जो छत्तीसगढ़ जैसे दुर्गम इलाके से

आई हैं, सभी ने एक अच्छा विचार और विचारों के माध्यम से भारत में बदलाव, भारत की नई तस्वीर आप सभी के सामने रखी।

मैं विशेष रूप से खेल युवा मंत्रालय को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं, जिन्होंने देश में दो लाख से ज्यादा नौजवानों के बीच में इस युवा संसद प्रतियोगिता को कराया और उनके विचारों तथा अनुभवों को लोकतांत्रिक प्रक्रिया के अंदर वे हिस्सा बने।

बदलते भारत की तस्वीर और इस तरीके से हमारी आजादी प्राप्त करने के लिए त्याग, बलिदान और कुर्बानियां उसका इतिहास और उसके साथ विश्व में नए भारत की कल्पना को उन्होंने रखा, इसके लिए मैं उन सभी प्रतिभागियों को बहुत-बहुत साधुवाद देता हूं।

दुनिया का सबसे प्राचीनतम लोकतंत्र भारत है। इसीलिए इसे मदर ऑफ डेमोक्रेसी कहते हैं। हमारे जीवन, कार्य प्रणाली, व्यवहार में वैदिक काल से लेकर महाभारत काल से लेकर और बुद्ध के काल तक का इतिहास हम देखते हैं। इसी तरीके से उस समय भी सामूहिकता के साथ निर्णय लेना और उस निर्णय को बिना कानून के समाज द्वारा मानना हमारे लोकतंत्र की प्रक्रिया रही है। विशेष रूप से हर कालखंड के अंदर लोकतंत्र की अपनी विशेषता रही है। अत: लोकतंत्र की जननी भारत है और इसीलिए हमने जी-20 के अंदर जिस तरीके की हमारी संस्कृति-संस्कार हैं, उसी तरीके से हमने दुनिया में जी-20 का विषय 'एक पृथ्वी, एक परिवार और एक देश' रखा है।

हमारे तथा विश्व के सर्वोच्च नेता माननीय नरेंद्र मोदी जी ने कहा है कि जब तक हम 'वसुधैव कुटुम्बकम्' यानी सारे विश्व को पूरा परिवार नहीं मानेंगे, तब तक हम अपने-अपने देश की चाहे कितनी भी प्रगति कर लें, जब सारे विश्व की प्रगति होगी, तभी अपने-आप देश की प्रगति होगी।

ये विचार ही आने वाले समय में दुनिया को एक नई दिशा देने का काम करेंगे। इसीलिए उन्हीं विचारों के मंथन के लिए आप यहां पर आए हैं। आपने आजादी के पहले के इतिहास की चर्चा की, जो अलग-अलग क्षेत्रों से संबंधित थी। आजादी के बाद भारत और उसके बाद नए भारत का निर्माण हुआ।

हम काफी परिवर्तन देख रहे हैं। यह परिवर्तन हम नौजवानों की आंखों में देख रहे हैं। उनके आत्मविश्वास, उनकी बौद्धिक क्षमता, उनकी इनोवेशन की क्षमता, बदलाव के चिंतन में हम यह देख रहे हैं। यह चिंतन चर्चा और संवाद से आता है।

जब दूरदराज गांव का व्यक्ति अपने विचारों को व्यक्त करता है, तो उसके मन में यह भाव रहता है कि मेरा गांव, मेरा शहर, मेरा देश ऐसा होना चाहिए। सामाजिक बदलाव लाने के लिए उसके मन की मंशा चर्चा और संवाद में झलकती है, जो मैंने यहां के वक्ताओं में देखी है। इसीलिए चर्चा, संवाद, विचारों का आदान-प्रदान, सुविचार, सकारात्मक विचार व सकारात्मक आलोचना ही हमारे देश के लोकतंत्र की ताकत है।

हम युवा संसद का आयोजन इस विचार से करते हैं कि युवा भारत में लोकतंत्र की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार बने और संविधान को जाने।

हमने 75 वर्षों की लोकतंत्र की यात्रा में केवल मतदाता मानकर अपना कर्तव्य निभाया, तो हम देश में परिवर्तन नहीं ला सकते। इस लोकतंत्र में हमारी सक्रिय भागीदारी, इस देश के बदलाव में हमारी सक्रिय भागीदारी और दुनिया के बदलाव से ज्यादा तेज बदलाव भारत में जो हुआ, उसमें हमारे देश के नौजवानों का योगदान है।

अभी माननीय अनुराग जी बता रहे थे कि एक समय था, जब भारत में बेटियों को पढ़ाने के लिए लोग आंदोलन किया करते थे। बेटी की शिक्षा के लिए सामाजिक आंदोलन हुआ करते थे। आज कितना परिवर्तन हो गया है? देश की कोई भी प्रतियोगी परीक्षा हो, कोई भी क्षेत्र हो, हर क्षेत्र में हमारी बेटियां अग्रिम पंक्ति पर हैं। चाहे धरती हो, चाहे अंतरिक्ष हो, चाहे विज्ञान हो, चाहे तकनीक हो, चाहे सामाजिक सेवा हो, चाहे राजनीति का क्षेत्र हो,

चाहे डॉक्टर, इंजीनियर या चार्टर्ड अकाउंटेंट हों, भारतीय प्रशासनिक सेवा हो या राज्य प्रशासनिक सेवा हो, हर जगह हमारी बेटियां आगे बढ़ रही हैं और नए तथा बदलते भारत की तस्वीर हम देख रहे हैं।

मेरे नौजवानो, मैं आपसे यही कहना चाहता हूं कि इस भारत को बदलने का सबसे बड़ा योगदान हमारा है। आजादी के आंदोलन में भी 18 से 22 साल के नौजवानों का योगदान था और 75 वर्षों के लोकतंत्र की यात्रा में भी जो सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक बदलाव आए, उसमें भी युवाओं की भूमिका रही। चाहे आर्थिक क्षेत्र में स्टार्ट अप का क्षेत्र हो, सामाजिक क्षेत्र में सामाजिक सेवा का क्षेत्र हो, हर जगह युवाओं की भूमिका अहम रही है।

मैं अभी कुछ दिन पहले सिक्किम में था। उस पहाड़ी राज्य में मैंने देखा कि वहां के नौजवानों का क्या व्यू है? वे अपने गांव में शिक्षा और बदलाव चाहते थे। वे कई किलोमीटर दूर बच्चों को पढ़ाने आते थे। वे उस गांव में सामाजिक बदलाव की एक ताकत और ऊर्जा के साथ काम करना चाहते थे। चाहे दुर्गम पहाड़ियां हों, चाहे जमीन हो, चाहे रेगिस्तानी इलाका हो, चाहे आदिवासी इलाका हो, हर जगह, हर इलाके के अंदर अब भारत का नौजवान नए इनोवेशन कर रहा है।

चाहे आर्थिक क्षेत्र हो, चाहे सामाजिक क्षेत्र हो, चाहे राजनीतिक बदलाव हो, उस युवा की भूमिका महत्वपूर्ण है। इतना ही नहीं, दुनिया के विकसित देशों में भी वहां के आर्थिक-सामाजिक बदलाव में भारत के नौजवानों की भूमिका अहम है। जब आप जानेंगे कि कितने लोगों ने अपनी जवानी कुर्बान करके इस देश को आजादी दिलाई, तो आप महसूस करेंगे कि इतनी सामर्थ्य और शक्ति आप में है। इस सामर्थ्य-शक्ति की ऊर्जा को आप यहां से लेकर जाएंगे।

अब हमारा योगदान क्या होना चाहिए, इस विचार के साथ आपको जाना है कि मेरे गांव के अंदर, शहर के अंदर बदलाव की ताकत मुझे खड़ी करनी है।

जो ऊर्जा, जो सामर्थ्य हमारे अंदर है, जो सोचने, नए चिंतन करने की ताकत हमारे अंदर है, उसका उपयोग मुझे इसी उम्र में करना है, मुझे बदलाव अभी लाना है, भारत के प्रधानमंत्री जी का सपना वर्ष 2047 तक का है, लेकिन इस सपने को मुझे जल्दी पूरा करना है, आज इस संकल्प के साथ आप इस केन्द्रीय कक्ष से जाएंगे।

हर क्षेत्र के अंदर, चाहे सामाजिक सेवा का क्षेत्र हो, गाँव में बदलाव लाने का क्षेत्र हो, आर्थिक परिवर्तन का नया युग हो, चाहे राजनीतिक क्षेत्र हो, हमारी लोकतांत्रिक संस्थाओं में सक्रिय भागीदारी हो, लोकतांत्रिक संस्थाओं के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक बदलाव में हमारी भूमिका हो, यह सब हमें तय करना है। आप देख रहे होंगे कि हमारे अनुराग जी यहाँ उपस्थित हैं, ये चार बार से मेंबर ऑफ पार्लियामेंट हैं। जब इस नौजवान जैसी सोच रखने वाले लोग आगे आएंगे और इस विचार से आएंगे कि मुझे मेरे भारत को बनाना है, मेरा केवल अधिकार नहीं, मेरा दायित्व है और यह दायित्व मुझे निभाना है। मेरा भी कोई नैतिक कर्तव्य है, इस मनोभाव, इन संस्कारों के साथ आपको यहाँ से जाना है।

नया, विकसित भारत बनाने में हमारी भूमिका हो और देश के अन्य नौजवान आपके इन सुविचारों, विचारों से प्रेरणा लेकर नए भारत के निर्माण में जुटें। जब भारत के सभी नौजवान इस विचार से चलेंगे, इस मंथन से चलेंगे, इस चिंतन से चलेंगे तो निश्चित ही बदलाव आएगा और बदलाव हमें ही करना है, यही संकल्प लेकर यहाँ से जाएं। आप सभी को बहुत-बहुत शुभकामनाएं, बहुत-बहुत बधाई।